ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

कुभंनगरी हरिद्वार का पौराणिक, धार्मिक व ऐतिहासिक अवलोकन

डॉ0 दयाधर प्रसाद सेमवाल

सहायक प्राध्यापक इतिहास विभाग राजकिय स्नातकोतर महाविदयालय अगस्त्यमुनि रूद्रप्रयाग

हरिद्वार भारतवर्श के प्राचीन व पौराणिक नगरों में से एक है। पुराणिक और वैदिक साहित्य में इसे हरि–द्वार, गंगाद्वार, कुशावर्त, कपिलाद्वार, मायापुरी, स्वर्गद्वार, मोक्षद्वार, जहानुतीर्थ, हरिपद तीर्थ आदि नामों से जाना जाता है। वि व विख्यात तीर्थ नगर हरिद्वार ऐतिहासिक, पौराणिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसकी गणना भारतवर्श के सात मोक्षदायक तीर्थों में की जाती है।

जिसमें माया से तात्पर्य मायापुर हरिद्वार से है। हरिद्वार की गणना चारधाम (बद्री, हरिद्वार, पुरी, रामेश्वर) इक्यावन सिद्ध क्षेत्रों, 108 दिब्य भाक्ति स्थलों, अष्टोत्तर भाव दिब्यदेशों, आठ श्री विग्रहों और बल्लभाचार्य की 89 बैठकों में होने से बैश्णव, भौव, भााक्त, नाथ, सिद्ध सभी सम्प्रदाय के लोगों का यह महान आस्था का केन्द्र है।

यह नगरी प्राचीनकाल से ही ऋशिमुनियों की तपोःस्थली रही है, इस स्थल के हरिद्वार नाम को लेकर दो पौराणिक कहावतें प्रसिद्ध हैं। भौव सम्प्रदाय से सम्बद्ध हिन्दू इसे हर–द्वार, हर से तात्पर्य शिव तथा द्वार से प्रवेश द्वार अर्थात भगवान केदारनाथ तक पहुँचने वाला प्रवेश द्वार के कारण इसे हरिद्वार जबकि वैश्णव सम्प्रदाय के लोगों ने हर से तात्पर्य विश्णु, द्वार से प्रवेश अर्थात भगवान बद्रीनाथ पहुँचने वाले प्रवेश द्वार होने के कारण इसे विश्णु–हरि से सम्बद्ध कर ''हरिद्वार'' कहा है।

हरिद्वार को ''मायातीर्थ'' या ''मायापुरी'' कहने के सम्बन्ध में पुराणों में उल्लेख है कि हरिद्वार की उपनगरी 'कनखल' राजा दक्ष की राजधानी थी। राजा दक्ष द्वारा कनखल में वृहस्पति सब नामक यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें समस्त देवताओं सहित ब्रह्मा, विश्णु और ऋशि–मुनियों को भी आमन्त्रित किया गया परन्तु शिव को आमन्त्रित नहीं किया गया। सती द्वारा शिव को यज्ञ में चलने को कहा गया, परन्तु शिव ने मना कर दिया। अन्ततः सती की हट करने पर शिव ने सती को यज्ञ में जाने की अनुमति प्रदान की, वहाँ पहुँचकर सती ने जब पिता दक्ष से शिव को न बुलाने का कारण पूछा तो दक्ष ने कहा कि तुम्हारे पति तो अमंगल का प्रतीक, भूत–पिशाचों के स्वामी हैं, उनका यहाँ क्या काम? सती महामाया पति का अपमान सहन न कर सकी और स्वयं को हवनकुण्ड में आत्मदाहित कर लिया। सती की अग्नि समाधि लेने की सूचना जब शिवगणों ने शिव को दी तब शिव ने क्रोधित होकर अपनी जटाओं से 'वीरभद्र' को उत्पन्न कर दक्ष का सर्वस्व नश्ट करने का आदेश दिया। वीरभद्र ने दक्ष की राजधानी पहुँकर सब कुछ तहस–नहस कर दिया तथा दक्ष का सिर काटकर हवनकुण्ड में झोंक दिया। शिव सती का अधजला शरीर (शव) अपने कंधे पर धारण कर घूमते रहे, तब

www.ijahms.com

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से शव के कई टुकड़े कर दिये जो 51 स्थानों पर गिरे। एक टुकड़ा हरिद्वार के मध्य में गिरा, इसलिए यह क्षेत्र मायातीर्थ या मायापुरी के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

अन्य 50 टुकड़े जहाँ–जहाँ पड़े वहाँ भाक्तिपीठों की स्थापना हुई। हरिद्वार को ''गंगाद्वार'' नाम से भी जाना जाता है। महाभारत के अनुसार यहाँ पर गंगा पहाड़ों को तोड़कर वेग से बहती है और इस पुण्य तीर्थ का लाभ राजन, ब्रह्मऋशि और सामान्य जन सभी उठाते हैं।इस पुण्यक्षेत्र में केवल मानव ही नहीं अपितु देवता, गन्धर्व एवं देवर्शि भी रहकर पुण्यफल प्राप्त करते हैं।महाभारत युद्ध के पश्चात् धृतराश्ट्र गन्धारी को लेकर गंगाद्वार आये थे क्योंकि इस पुण्य स्थल के सम्बन्ध में उल्लेख है कि, गंगाद्वार (हरिद्वार) कुशावर्ते, बिल्यक, नीलपर्वत और कनखल में स्नान करने वाले का पुनर्जन्म नहीं होता अर्थात जिसने इस पुण्य स्थल का द ान किया उसका जन्म सफल हो जाता है। हरिद्वार के लिये ''स्वर्गद्वार'' का उल्लेख महाभारत के वनपर्व में हुआ है जिसमें लिखा है कि, गंगाद्वार से उत्तर में जो देवभूमि महागिरि का अंचल प्रारम्भ होता है वह स्वर्गद्वार के समान है, जहाँ धर्मज्ञ नमस्कार कर आगे बढ़ते हैं।

केदारखण्ड में भी इस स्थान के लिए ''स्वर्गद्वार'' का प्रयोग हुआ है, गंगाद्वार के उत्तर में स्वर्गभूमि है जिसके द ान मात्र से भवबन्धनों से मुक्ति मिल जाती है। इसके अतिरिक्त हरिद्वार के लिये स्वर्गद्वार का उल्लेख 1414–15 ई0 में कटेहर के राजा हरिसिंह के लेखों में मिलता है जो इस अवधि में स्वर्गद्वार की यात्रा पर आये थे। गंगा का विश्णु चरणों (बद्रीनाथ) से निकलकर आने के कारण हरिद्वार का एक नाम ''हरिपद तीर्थ'' भी पड़ा।

मायापुर का दक्षिणी भाग कनखल नाम से जाना जाता है। यह वही स्थान है जहाँ राजा दक्ष द्वारा 'बृहस्पति सब' नामक यज्ञ का आयोजन किया गया था। महाकवि कालीदास ने गंगाद्वार में कनखल को अति पावन तीर्थ कहकर नामोल्लेख किया है।

कालीदास के मेघदूत में मेघ को कुरूक्षेत्र से चलकर कनखल तीर्थ में पहुँच जाने को कहा गया है तथा गंगा को 'जहानुकन्या' कहा गया है।जहाँ जहनुपुत्री गंगा भौलराज हिमालय से आकार सगर के पुत्रों के लिए स्वर्ग की सीढ़ियों से उतरती है वहीं कनखल है। कर्म पुराण में युगानुरूप तीर्थों के बारे में कहा गया है कि सत्ययुग में नैमिशारण्य, त्रेता में पुश्कर, द्वापर में कुरूक्षेत्र और कलियुग में कनखल प्रमुख तीर्थ होंगे।कनखल में त्रिरात्रि (तीन रातें) निवास और स्नान करने से अ वमेघ यज्ञ करने के समान फल की प्राप्ति होती है, पुनर्जन्म नहीं होता और स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है।

हरिद्वार कुम्भनगरी के नाम से भी जाना जाता है। कुम्भ पर्व के बारे में अनादि काल से चली आ रही कथा के अनुसार देवताओं और असुरों में समुद्र मंथन के समय अमृत के लिए खींचातानी में चार स्थानों हरिद्वार में गंगा के तट पर, इलाहाबाद में गंगा–यमुना व सरस्वती के संगम पर, नासिक में गोदावरी के तट पर, व अवन्तिका (उज्जैन) में क्षिप्रा के तट पर अमृत कुम्भ रखा गया था। इसलिए इन्हीं चार स्थानों पर प्रत्येक 12 साल में पूर्ण कुम्भ व 6 साल में अर्ध–कुम्भ के समय स्नान करने को बहुत पुण्य माना जाता है। ह्वेनसांग ने भी हरिद्वार कुम्भ

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

का उल्लेख करते हुये लिखा है कि हरिद्वार में उस समय चौथी दुकान हलवाई तथा हवन सामग्री की हुआ करती थी।

हरिद्वार नाम का उल्लेख नारद पुराण, वाराहपुराण व पदमपुराण में हुआ है। पदम पुराण का समय 9वीं, 10वीं सदी माना जाता है। सम्भवतः हरिद्वार नाम इसी समय पड़ा होगा। सत्ययुग में यहीं से होकर भगवान विश्णु तपस्यार्थ बदरिकाश्रम गये होंगे इसी कारण इसे हरिद्वार कहा गया होगा, क्योंकि हरिभद्र विश्णु का वाचक है। मुगल काल में भी इसे हरिद्वार कहा जाता था। अबुलफजल ने इस स्थान के लिए हरिद्वार भाब्द लिखते हुये इसे ि ाव की राजधानी बताया है। जहाँगीर भी अपने भाासनकाल के सोलहवें वर्श में आगरा की प्रचण्ड गर्मी से घबराकर स्वास्थ्य लाभ हेतु हरिद्वार आया था। उसने हरिद्वार को हिन्दुओं के प्रसिद्धतम तीर्थ स्थानों में से एक बताया जहाँ ब्राह्मण और साधु अपने लिए एकान्त स्थान बनाकर अपने धर्मानुसार ईश्वर का पूजन करते हैं।

पौराणिक युग की यात्रा समाप्त करने के पश्चात् हरिद्वार नगर का प्रवेश ऐतिहासिक युग में हुआ। ऐतिहासिक दृश्टि से छठी भाताब्दी ईसा पूर्व महाजनपद काल में हरिद्वार कुरू जनपद का अंग था। यह जनपद मेरठ–दिल्ली–थाने वर के भू–भाग में विस्तृत था जिसकी राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी। मौर्य सम्राट अशोक के भाासनकाल में हरिद्वार मौर्य साम्राज्य का अभिन्न अंग था जिसका उल्लेख अशोक द्वारा उत्कीर्ण कराये गये कालसी शिलालेख (देहरादून) में हुआ है। इसके अतिरिक्त गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा किये गये अजमेरीपुर उत्खनन में मिले मौर्यकालीन साक्ष्यों से इस स्थल का मौर्य साम्राज्य में होना स्पश्ट करता है। गुप्तकाल में हरिद्वार क्षेत्र गुप्त साम्राज्य का शासित प्रदेश था। इस समय कनखल का विस्तार हुआ, उत्तरगुप्तकाल में अनेक पुराणों के सम्पादन ने कनखल की बढ़ती बस्ती के उत्तरी भाग को मायापुर नाम से महिमा मंडित कर दिया था।

हर्शबर्धन के काल में भारत में बौद्ध स्थलों के भ्रमण पर आये प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग लिखता है कि वह 'सु–लू–किन' (श्रृहन) की यात्रा के पश्चात् 'मो–यू–लो' (मायापुर) हरिद्वार पहुँचा था, जो उसके अनुसार गंगा के तट पर था। उस नगर से कुछ दूरी पर गंगाद्वार नामक महान मन्दिर था। कनिंघम ने उपरोक्त उल्लेख के आधार पर निश्कर्श निकाला है कि यह मसपुर/मयूरनगर के लिए आया है जो संभवतः कनखल से ज्वालापुर तक प ि चम दिशा में प्रवाहित रही होगी। चूंकि इस स्थान पर हरिद्वार नगर के भवन बन गये हैं। अतः संभव है कि जहाँ नदी रही होगी वहाँ धीरे–धीरे आवासीय क्षेत्र बन गया हो। दसवीं व ग्यारहवीं शताब्दी में महोवा के चन्देलों का प्रभाव सम्पूर्ण उत्तर भारत में फैला हुआ था। हरिद्वार क्षेत्र भी इसके प्रभाव में था। चन्देल राजा परमसिंह देव (परमाल) के दरवारी कवि जगनिक द्वारा रचित ''आल्हा खण्ड'' एवं चन्द्रबरदाई रचित ''पृथ्वीराजरासो'' में हरिद्वार का उल्लेख किया गया है। इस समय तक गंगाद्वार को हरिद्वार नाम से पुकारा जाने लगा था। महमूद गजनवी ने भारत पर आक्रमणों के समय हरिद्वार नगर में काफी तबाही की थी जिससे नगरीय भू–दृ यों को अत्यधिक हानि उठानी पड़ी थी। मुस्लिमकाल में हरिद्वार कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा शासित प्रदेश था। 1398 ई0 के तैमूर लंग के आक्रमणों से भी हरिद्वार को काफी हानि पहुँची थी। इस समय कनखल–मायापुर में विनाशकारी ध्वंस एवं लूट–लीला हुई थी। आइन–ए–अकबरी में

ISSN NO.2395-0692

International Journal of
IJAHMS Arts, Humanities and Management Studies

अबुल–फजल लिखता है कि, मायापुर ही हरिद्वार है। अकबर के शासन काल में हरिद्वार जनपद का क्षेत्र का महाल भोगपुर (परगना) था। महाल भोगपुर देवबन्द दस्तूर (जिला) तथा सरकार (सूबा) सहारनपुर के अन्तर्गत था। इसकी पुश्टि नोबिल के (1921) सहारनपुर गजेटियर से होती है जिसमें वह हरिद्वार को भोगपुर महाल का मुख्यालय बताता है। कम्पनी के भाासनकाल में सन् 1776 ई0 में अंग्रेज यात्री हार्डविक हरिद्वार ही गया था। हार्डविक ने हरिद्वार (नगर) को पहाड़ी की तलहटी में स्थित एक छोटा सा क्षेत्र बताया है। अंग्रेज यात्री हरिद्वार कुम्भ पर्व पर आया था उसके अनुसार लगभग 25,00,000 लाख व्यक्ति हरिद्वार में स्नान पर्व में सम्मलित हुये थे।

इस प्रकार हरिद्वार पौराणिक काल से ऐतिहासिक काल और वर्तमान काल तक एक प्रसिद्ध स्थल रहा है। पौराणिक काल में जहाँ अनेक देवताओं एवं ऋशियों ने यहाँ वास किया वहीं ऐतिहासिक काल में इसे अनेक राजाओं एवं राजकुमारों का आश्रय प्राप्त हुआ। जबकि वर्तमान काल में यह स्थान धर्मपरायण असंख्य लोगों का आश्रय स्थल बना है।

सन्दर्भ :–

i. प्रेतकल्प, गरूड़ पुराण, प्रकाशक, बी0एस0 प्रमिन्दर प्रकाशन, दिल्ली, 51।
   नैथानी, शिव प्रसाद, 1997, ''उत्तराखण्ड तीर्थ एवं मन्दिर'',पवेत्री प्रकाशन, श्रीनगर।
ii. कल्याण तीर्थांक, जनवरी 1957, गीताप्रेस, गोरखपुर।
iii. स्कन्दपुराण, केदारखण्ड, 1994,प्रभात मिश्र भाास्त्री हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग 12, इलाहाबाद।
iv. महाभारत वनपर्व, 1997,।
v. ध्यानी, सुमन, 2003, सारथी ऑफसेट प्रेस बद्रीनाथ मार्ग, कोटद्वार,।
vi. महाकवि कालिदास, ''मेघदूतम'।
vii. श्रीवास्तव, के0सी0, 2000, यूनाइटेड बुक डिपो 21, यूनिवर्सिटी रोड़, इलाहाबाद,
viii. कनिंघम, एलैक्जेण्डर, ''प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल'', अनुवादक–जगदी ा चन्द्र, आदर्श हिन्दी पुस्तकालय मालवीय नगर इलाहाबाद।
ix. नोबिल, एच0आर0, 1921, गवर्मेन्ट प्रेस, लखनऊ।

www.ijahms.com